अमेरिकी कॉलेजों में दाखिले के गुर

दीपांजली काकाती

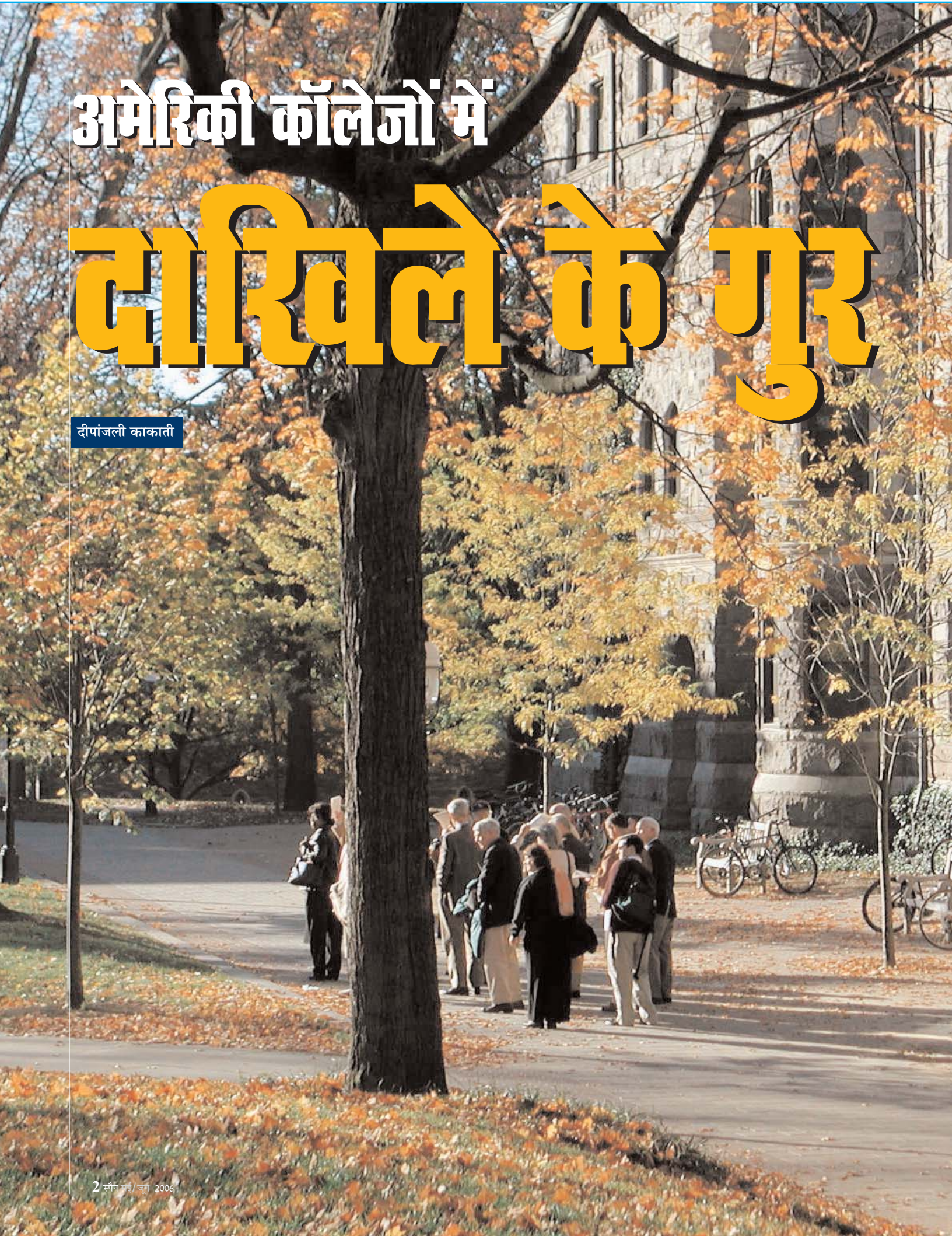

मेहरान लोवेट/ प्रिंस्टन यूनिवर्सिटी

स्टू मिलर ©ए.पी. - डब्ल्यू.डब्ल्यू.पी.

बाएं: न्यू जर्सी स्थित प्रिंस्टन विश्वविद्यालय के परिसर का जायजा लेते लोग। विश्वविद्यालय की स्वैच्छिक छात्र टूर गाइड सर्विस 'ऑरेंज की टूर' के तहत यह सुविधा उपलब्ध कराई जाती है।
ऊपर: प्रॉविडिएंस, रोड आइलैंड में ग्रेजुएट डिग्री समारोह के दौरान ब्राउन यूनिवर्सिटी के सत्र 2004 के विद्यार्थी अमेरिका के पहले बैपटिस्ट चर्च से परिसर के मुख्य हरे-भरे क्षेत्र तक जाने के क्रम में कॉलेज हिल पर।

विदेश में उच्च शिक्षा हासिल करने की ख्वाहिश रखने वाले भारतीय छात्रों के लिए अमेरिका एक पसंदीदा जगह है। इंस्टीट्यूट ऑफ इंटरनेशनल एजुकेशन के मुताबिक वर्ष 2004-05 के शैक्षिक सत्र में अमेरिका में पढ़ने वाले भारतीय छात्रों की संख्या करीब 58 हजार थी। भारत ने 2001-02 में इस मामले में चीन को पछाड़ दिया था। इससे पहले उच्च शिक्षा के लिए अमेरिका आने वाले विदेशी छात्रों में चीनियों की संख्या सबसे ज्यादा हुआ करती थी। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के इंजीनियरिंग के छात्र सदाफ हुमायूं का कहना है कि अमेरिका में शोधकार्य के लिए बेहतरीन मौके हासिल होते हैं, जबकि भारत में इस मामले में अपनी सीमाएं हैं। यहां की शिक्षा प्रणाली की भी अपनी बंदिशें हैं। वह कहते हैं, ''अमेरिकी विश्वविद्यालयों में शोधकार्य के लिए शानदार सुविधाएं मौजूद हैं। वहां छात्रों को अपने कौशल को निखारने के बेहतरीन मौके मिलते हैं। साथ ही उन्हें यह तय करने की भी पूरी आजादी होती है कि वे क्या सीखें।''

अमेरिका के ग्रेजुएट प्रोग्राम

में प्रवेश से संबंधित सीडी-रॉम देखने के इच्छुक पाठक कृपया विजया खंडाविली को ई-मेल भेजें।

vijaya@fulbright-india.org

भारत में जिसे हम पोस्ट ग्रेजुएट कोर्स कहते हैं, अमेरिका में उसे ग्रेजुएट डिग्री प्रोग्राम कहा जाता है। ग्रेजुएट स्कूलों द्वारा मास्टर्स डिग्री, डॉक्टरेट और दूसरे पोस्ट ग्रेजुएट कोर्सों की डिग्री दी जाती है। एक शैक्षिक सत्र आमतौर पर नौ महीने का होता है। सत्र की शुरुआत अगस्त-सितंबर से होती है, जो मई-जून तक चलता है। शिक्षा संस्थान इसे अपनी सुविधा के लिहाज से दो, तीन या चार भागों में बांट लेते हैं। यदि शिक्षा सत्र दो भागों में बंटा होता है तो उन्हें शरद (फाल) एवं वसंत (स्प्रिंग) सत्र कहते हैं। भारत में संयुक्त राज्य अमेरिकी शैक्षिक प्रतिष्ठान (यूएसईएफआई) की उत्तरी क्षेत्र की सलाहकार लूना दास कहती हैं, ''यदि छात्रवृत्ति लेनी हो तो शरद सत्र की शुरुआत में प्रवेश लेना चाहिए क्योंकि इस समय ये ज्यादा आसानी से उपलब्ध रहती हैं और सत्र भी पूर्ण होता है।'' यूएसईएफआई अमेरिका में उच्च शिक्षा के अवसरों के बारे में सटीक और ताजातरीन जानकारी पाने का एकमात्र अधिकृत स्रोत है।

जो छात्र वर्ष 2007 के शरद सत्र में प्रवेश लेना चाहते हैं, उन्हें अभी से सक्रिय हो जाना चाहिए। भारत में यूएसईएफआई के उप निदेशक जमशेद ए. सिद्दीकी के अनुसार भारतीय छात्रों के लिए इस सत्र में 3600 मान्यता प्राप्त संस्थानों में प्रवेश लेने और हजारों उच्च शिक्षा कार्यक्रमों में से अपनी पसंद का कार्यक्रम चुनने का मौका है। उनके मुताबिक यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि हर छात्र अपना पसंदीदा कॉलेज चुन सकता है। सिद्दीकी कहते हैं कि अमेरिकी शिक्षा प्रणाली भारतीय प्रणाली की तरह सिर्फ ज्ञान ही नहीं देती, बल्कि हर छात्र को उसके भविष्य के लिहाज से एक कुशल पेशेवर भी बनाती है।

मनीष खन्ना दिल्ली के नेताजी सुभाष इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में इंजीनियरिंग के छात्र हैं। उनका कहना है कि अमेरिका में शिक्षा की शानदार क्वालिटी के अलावा एक और बात ने उन्हें उच्च शिक्षा के लिए वहां जाने के लिए प्रेरित किया है और वह है शोध के लिए पर्याप्त आर्थिक सहायता मिलना। मनीष कहते हैं कि वहां पाठ्यक्रम काफी लचीला है और वह छात्रों की जरूरतों को पूरा करता है।

अगर आप अपनी पसंद के संस्थानों के बारे में जानना चाहते हैं तो उनकी वेबसाइट पर जाइए और विस्तार से जानकारी चाहते हों तो संबद्ध कॉलेज के प्रोफेसरों और प्रवेश प्रक्रिया से जुड़े अधिकारियों को लिखिए। यूएसईएफआई के कार्यालय में जाइए और उन छात्रों से बात कीजिए जो अमेरिकी शिक्षा संस्थानों में पढ़ चुके हैं या फिर अमेरिकी विश्वविद्यालयों द्वारा भारत में लगाए गए प्रवेश मेलों में गए हों। लिंडेन एजुकेशनल सर्विसेज, अमेरिकी विश्वविद्यालयों को विदेशी छात्रों की भर्ती में मदद देती है। इस साल मार्च-अप्रैल में इसने दिल्ली, मुंबई और बेंगलूर के छात्रों को अमेरिका के 24 शिक्षा संस्थानों के अधिकारियों से मिलवाया। यदि आपके पास पर्याप्त पैसा है तो आप सीधे भी किसी अमेरिकी शिक्षा संस्थान में जा सकते हैं और वहां के विभिन्न पाठ्यक्रमों के बारे में जानकारी हासिल कर सकते हैं। आप चाहें तो किसी संस्थान की ग्रीष्म कक्षाओं में दाखिला भी ले सकते हैं। कई संस्थान कैंपस टूर का आयोजन भी करते हैं और मौजूदा छात्र प्रवेश के इच्छुक छात्रों को अपने संस्थान के बारे में जानकारी देते हैं। दिक्कतों से बचने के लिए आपको चाहिए कि आप अगस्त तक अपने पसंदीदा विश्वविद्यालयों का चयन कर लें, ताकि अगले साल के शरद सत्र में प्रवेश के लिए आवेदन करने के साथ ही वित्तीय मदद, वीजा, आने-जाने के साधन और रहने आदि की व्यवस्था कर सकें।

लूना दास कहती हैं कि छात्रों को प्रख्यात कॉलेजों के मुकाबले कम ख्याति प्राप्त कॉलेजों पर भी ध्यान देना चाहिए। कई ऐसे कॉलेज भी हैं जो कम लोकप्रियता के बावजूद पढ़ाई के मामले में अव्वल हैं और आपकी अपेक्षाओं पर खरे उतरते हैं। उनकी राय है कि किसी भी यूनिवर्सिटी या कॉलेज को सिर्फ इस आधार पर नामंजूर न करें कि उसके बारे में आपके माता-पिता या दोस्तों ने सुना नहीं है। किसी भी कॉलेज के किसी भी विभाग की प्रतिष्ठा उसके शिक्षकों से जुड़ी होती है। ऐसे में किसी योग्य शिक्षक का छात्र होना, किसी नामी विश्वविद्यालय का छात्र होने से ज्यादा मायने रखता है। छात्रों को एक बात का ध्यान और रखना चाहिए कि जिस संस्थान में आप आवेदन करने जा रहे हैं, उसकी डिग्री को भारत में मान्यता हासिल है कि नहीं।

दिल्ली विश्वविद्यालय में फिजियोथेरेपी की अंतिम वर्ष की छात्रा शुचि सूद का अमेरिका में पोस्ट ग्रेजुएशन के लिए आवेदन करने का इरादा है। वह कहती हैं कि वहां पढ़ने से बहुत कुछ सीखने का मौका मिलेगा क्योंकि फिजियोथेरेपी के क्षेत्र में अमेरिका की विशेषज्ञता बहुत ज्यादा है। शुचि की राय है कि भारत में इस मामले

विकास नरूला

फरवरी 2005 में नई दिल्ली में लिंडेन अमेरिकी विश्वविद्यालय मेला आयोजित किया गया। इस दौरान आए छात्रों के सवालों के जवाब देते यूनिवर्सिटी ऑफ सैन फ्रांसिस्को के अंतर्राष्ट्रीय संबंध (एशिया) निदेशक रिचर्ड जॉनसन।

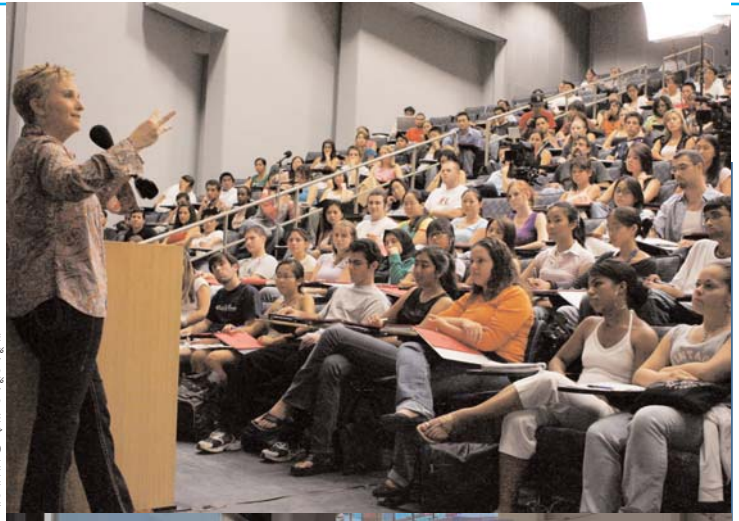

रॉड सैक्सन © ए.पी.-डब्ल्यू.डब्ल्यू.पी.

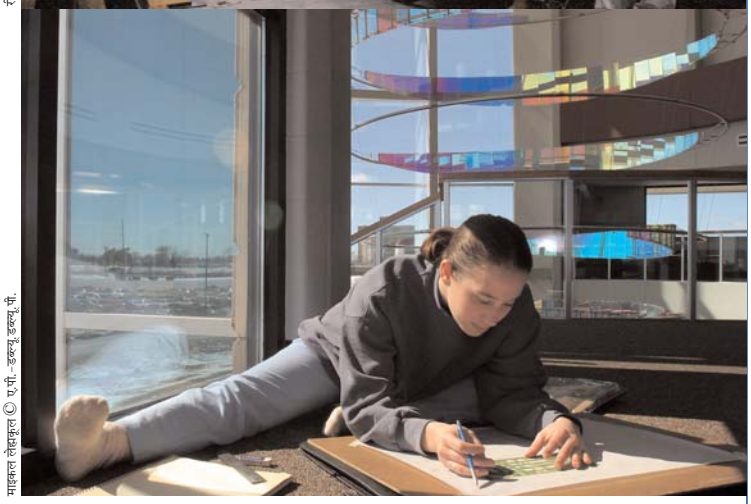

माइकल लेवाकुल © ए.पी.-डब्ल्यू.डब्ल्यू.पी.

दाएं: लॉस एंजिलीस में यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया में कैंसर विज्ञान पर एक कक्षा में संगीतज्ञ मेलिसा एथरीज बता रही हैं कि वह कैंसर से किस तरह जूझीं।

दाएं, नीचे: पेरीस्बर्ग, ओहायो के ओवंस सामुदायिक कॉलेज परिसर के ललित एवं नाट्य कला केंद्र में कक्षाओं के बीच समय निकालकर अपना 'हाउस प्लान' बनातीं यूनिवर्सिटी ऑफ फिंडले की ग्रेजुएट छात्रा एमिली फ्रैंक्स। दो वर्षीय संस्थान में मूल कोर्स की पढ़ाई कर वह अपना पैसा बचा रही हैं।

में विकल्प सीमित हैं, क्योंकि भारत में यह एक लोकप्रिय और ज्यादा जाना-पहचाना विषय नहीं हैं।

सभी जरूरी परीक्षाएं जैसे विदेशी भाषा के तौर पर अंग्रेजी की परीक्षा, ग्रेजुएट रेकॉर्ड परीक्षा (जीआरई) या ग्रेजुएट मैनेजमेंट एडमिशन टेस्ट (जीमैट) वर्ष 2007 के शरद सत्र में प्रवेश लेने के लिए आपको मई से अक्टूबर 2006 के बीच दे देनी चाहिएं। अंग्रेजी की परीक्षा के अंक भारतीय और विदेशी छात्रों के लिए बहुत मायने रखते हैं। जीआरई के जरिए भी छात्र के अंग्रेजी भाषा के ज्ञान को परखा जाता है। मैसाच्युसेट्स के एमर्सन कॉलेज में स्कूल ऑफ कम्युनिकेशन के डीन स्टुअर्ट ए. सिग्मैन कहते हैं कि पढ़ाई का माध्यम अंग्रेजी होने के कारण छात्रों को अपने दम पर अंग्रेजी में सोचने और खुद को अभिव्यक्त करने में सक्षम होना चाहिए। यदि आपके पास अमेरिकी स्कूलों की सूची है तो आप ये टेस्ट देकर अपने अंक संबद्ध स्कूलों को भेज सकते हैं। इससे आपका पैसा और समय बचेगा।

स्कूलों के नाम चुनने के बाद आपको नवंबर 2006 से मार्च 2007 के बीच प्रवेश के लिए आवेदन करना चाहिए। पूरी तरह भरे गए आवेदन पत्र के साथ आपको अपने शैक्षिक रिकॉर्ड के प्रमाण, टेस्ट के अंक, प्रवेश के उद्देश्य का विवरण, अनुशंसा पत्र और प्रवेश शुल्क भेजना होगा। जरूरी होने पर रचनात्मक कार्यों का विवरण और कार्य अनुभव का प्रमाण भी भेजना पड़ सकता है। यूएसईएफआई की शिक्षा सलाह सेवा की समन्वयक विजया खंडाविली के अनुसार, भारतीय छात्रों को यह बात हमेशा ध्यान में रखनी चाहिए कि अमेरिकी विश्वविद्यालयों में उनका प्रवेश उनकी योग्यता और सीटों की उपलब्धता पर निर्भर करता है। टेस्ट में प्राप्त अंकों के अलावा ये विश्वविद्यालय छात्र के प्रकाशित लेखों, शोध प्रोजेक्ट और पढ़ाई के उसके फोकस पर भी गौर करते हैं।

अमेरिका के ग्रेजुएट कार्यक्रमों में प्रवेश लेने के लिए अमेरिकी छात्रों को स्कूल और कॉलेजों में 16 साल अध्ययन करना होता है। भारत में छात्र 15 साल की पढ़ाई के बाद स्नातक हो जाते हैं। इस तरह उनको एक साल का अतिरिक्त समय मिल जाता है। इस दौरान वे किसी पोस्ट ग्रेजुएट कोर्स में दाखिला ले सकते हैं या किसी भी मान्यता प्राप्त संस्थान से कोई और कोर्स कर सकते हैं। लेकिन इस अतिरिक्त साल के लिए योजना बड़ी सावधानी के साथ बनानी चाहिए। बोस्टन यूनिवर्सिटी स्कूल ऑफ मैनेजमेंट के प्रवेश एवं आर्थिक सहायता विभाग के निदेशक एवलिन टैटे का कहना है कि हम उन लोगों को प्रवेश में वरीयता देते हैं जिन्होंने आरंभिक कोर्स के बजाय विशेषज्ञता वाले कोर्स किए होते हैं। स्कूल इस बात पर भी ध्यान देते हैं कि छात्र ने जो कोर्स किए हैं, उनसे उसे उस कोर्स में भी कोई मदद मिलेगी कि नहीं, जिसके लिए उसने आवेदन किया है।

अमेरिकी विश्वविद्यालय छात्रों से यह विवरण देने के लिए भी कहते हैं कि जिस कार्यक्रम के लिए आपने आवेदन किया है, वह आपके लक्ष्य को पाने में किस तरह मददगार हो सकता है। सिग्मैन का कहना है कि छात्र को यह विवरण खुद लिखना चाहिए। वह कहते हैं, 'अगर कोई और आपके लिए यह लिखता है तो हम आसानी से जान जाते हैं। हम आपसे कह सकते हैं कि आपकी रुचि पाठ्यक्रम में ऐसी नहीं है, जैसी कि आपके विवरण में नजर आ रही है।' छात्रों को अपने विवरण में इन चार सवालों का जवाब जरूर देना चाहिए- आप ग्रेजुएट कोर्स क्यों करना चाहते हैं, आपकी अकादमिक या शोध संबंधी रुचियां क्या हैं, आपने इसी स्कूल में आवेदन क्यों किया और आप अपनी क्लास को क्या खास दे सकते हैं। कहने का आशय यह है कि आपको इन बातों के विस्तार में जाने की जरूरत नहीं है कि आप कहां पैदा हुए, किस स्कूल में पढ़े और किस खेल में आपने हिस्सा लिया वगैरह। चयन समिति इन सब बातों को ज्यादा तवज्जो नहीं देती। हर विश्वविद्यालय का चयन का एक पैमाना होता है और वह उस पर कायम रहता है।

स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यू जर्सी के औद्योगिक इंजीनियरिंग विभाग में ग्रेजुएट कार्यक्रम की निदेशिका सूसन ली एल्बिन का कहना है कि जब आप अनुशंसा-पत्र बनवाते हैं, तो ऐसे लोगों का चयन करें जो आपके कौशल और आपकी योग्यताओं से अच्छी तरह वाकिफ हों। आपके प्रोफेसर इस काम में सबसे मददगार साबित हो सकते हैं।

विदेशी छात्रों के लिए वित्तीय मदद एक बड़ा मसला होता है। अपने वित्तीय रिकॉर्ड, जैसे बैंक स्टेटमेंट आदि को तैयार रखने के साथ ही छात्र को चाहिए कि वह अपना आवेदन टुकड़ों में न भेजे, क्योंकि इससे चयन की प्रक्रिया में देरी होती है और आप छात्रवृत्ति पाने का मौका गंवा सकते हैं। इंडियाना विश्वविद्यालय में अंतर्राष्ट्रीय दाखिलों के निदेशक क्रिस जे. फोले कहते हैं कि ''हमें अमेरिका के संघीय कानूनों का पालन करना होता है और इसके लिए यह सुनिश्चित करना होता है कि छात्र के पास पूरे साल के खर्चे के लिए पैसा है, चाहे वह उसे उसके स्कूल से मिले या किसी और स्रोत से।'' अमेरिकी ग्रेजुएट स्कूलों में छात्रों को शोध, शिक्षण और प्रशासनिक खर्चों की पूर्ति के लिए वित्तीय मदद दी जाती है। विजया खंडाविली कहती हैं कि जो विद्यार्थी शोध के क्षेत्र में जाना चाहते हैं, उनको चाहिए कि वे शोध को प्रमुखता देने वाले विश्वविद्यालयों, विभागों की सूची तैयार करें और फैकल्टी के सदस्यों की योग्यता के बारे में जानें।

अपनी पसंद के किसी संस्थान में दाखिला हो जाने के बाद अगस्त 2007 तक आपके पास छात्र वीजा होना चाहिए। इसके बाद समय होता है सामान बांधने और अमेरिका में आपकी प्रतीक्षा कर रहे रोमांच का लुत्फ उठाने का। □